'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२५ | वाराणसी, शनिवार, ३१ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

शालटेंग (जम्मू-कश्मीर) १-८-'५९

लोकमान्य की राह पर चलकर ग्रामराज्य की स्थापना करें

कई देहातों से आप लोग हमारी बात सुनने के लिए आये हैं। आप जानते होंगे कि हमारे देश के एक बहुत बड़े बुजुर्ग इसी दिन दुनिया को छोड़कर चले गये। १ अगस्त को उनकी वफात (मृत्यु) हुई थी। अब उस बात को ३९ साल हो गये हैं। गांधीजी के पहले सारे हिंदुस्तान को जगानेवाले और गांधीजी की राह बनानेवाले वे थे, जिनका नाम 'लोकमान्य तिलक' है। लोकमान्य नाम उन्हें लोगों ने दिया था। इसके मानी है—लोगों के प्यारे, अजीज। उन दिनों अंग्रेजों का हमपर बड़ा जुल्म चलता था, उनका बहुत दबाव था। उनके खिलाफ लोकमान्य जूझते रहे। हथियार लेकर नहीं, बल्कि गांधीजी के जैसे ही बिना हथियार के। वे सबको समझाते थे कि आजादी सबका हक है। अंग्रेजों ने चिढ़कर उनपर केस चलाया और उन्हें ६ साल की सजा दी। यह ५१ साल पहले की बात है। उन दिनों वह सजा बहुत बड़ी मानी जाती थी, बाद में गांधीजी आये और हम सब जेल जाने लगे तो सजा का डर खत्म हुआ, लेकिन उस (लोकमान्य के) जमाने में लोग सजा से डरते थे। लोकमान्य को सजा की बात सुनायी गयी और उन्हें मोटर में बिठाकर जेल की तरफ ले चले, तब बीच में ही नींद का समय आया। वे मोटर में ही सो गये। जेल में छह साल तक बाल-बच्चों से, दोस्तों से मुलाकात नहीं होगी और पता नहीं कहाँ भेजा जायगा, इन सब बातों का उनपर कोई असर नहीं हुआ। उन्हें हिन्दुस्तान के बाहर ब्रह्मदेश में भेजा गया था, लेकिन उस रात वे बिलकुल बेफिक्र दिमाग से सोये। उसका हमपर बहुत असर हुआ।

लोकमान्य की कामना

जेल में वे किताबें पढ़ते रहे और लिखते रहे। गीता पर उनकी बड़ी भक्ति थी। जेल में ठंडा दिमाग रखकर बिना किसी फिक्र के वे अपनी जिंदगी बसर करते रहे। उनकी एक बात का हमपर बड़ा असर हुआ। उन्होंने कहा कि काम करो, लेकिन उसका फल मत चाहो। गीता, कुरान, बाइबल—इन सब किताबों ने कहा है कि फल की परवाह मत करो, फल मिले तो ठीक, न मिले तो भी ठीक। फल चखने की ख्वाहिश मत रखो। लेकिन लोकमान्य ने कहा कि ऐसा समझकर काम करो कि कामयाबी या फल मिलनेवाला ही नहीं है, हम नाकामयाब ही होनेवाले हैं। वे अपने लिए कहते थे कि मैं चौबीसो घंटे यही सोचता हूँ कि अपना देश कैसे आजाद होगा और लोग अपने पाँव पर कैसे खड़े होंगे, कैसे तरक्की करेंगे, लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरे जीते जी यह होनेवाला नहीं है। आजादी अपनी आँखों से देखने का नसीब मुझे हासिल नहीं होगा, दूसरों को ही हासिल होगा, लेकिन मुझे जो खुशी काम करने से हासिल होती है, वह दूसरों को नहीं होगी। मुझे कोशिश करने की खुशी हासिल होती है। अच्छा काम करने में जो तसल्ली, इत्मीनान और सुकून है, वह उसका फल हासिल होने में नहीं है। यहाँपर आप लोग अखरोट का दरख्त लगाते हैं। उसमें तीस साल के बाद फल आते हैं याने हमने दरख्त लगाया तो हमें फल चखने को नहीं मिलेंगे, हमारे (मरने के) बाद दूसरे लोगों को मिलेंगे। हमारे पुराखाओं ने जो दरख्त लगाये, उसके फल हमें मिलेंगे, यानी फल चखने की ख्वाहिश रखे बगैर कोशिश करने की बात है। जिंदगी में सबसे बेहतर खुशी कोशिश करने से हासिल होती है। फल की खुशी तो चंद मिनटों के लिए होती है। जिसे अल्लाह का दर्शन होगा, उसे चंद मिनटों के लिए खुशी होगी, लेकिन उसका दर्शन पाने के लिए जो कोशिश करनी पड़ती है, इबादत, जद्दोजहद करनी पड़ती है, उसीमें जिंदगी का लुत्फ है। लोकमान्य ने कहा था कि तुम्हें फल नहीं मिलनेवाला है, यह यकीन रखकर कोशिश करो तो बड़ी खुशी हासिल होगी। बचपन में उनकी उन सब बातों का हमपर बड़ा असर हुआ। उनकी किताबें हम ध्यान से पढ़ते थे।

फल की आसक्ति छोड़कर काम करें

हमने कश्मीर की यात्रा करने का विचार बिना किसी कामयाबी की तमन्ना रखे ही किया था। आठ साल हुए, हम सारे हिंदुस्तान की यात्रा कर रहे हैं। लाखों एकड़ जमीन और पाँच हजार ग्रामदान लोगों ने हमें दिये, लेकिन हम जानते थे कि कश्मीर का जो माहौल है, वह हिंदुस्तान से अलग है। यहाँपर सरकार ने १८२ कनाल की हद बाँध दी है, इसलिए जमीन हासिल करने की ख्वाहिश रखे बगैर हम कश्मीर आये और अपना पैगाम सुना रहे हैं। इस तरह बाबा लोकमान्य तिलक की नसीहत को याद करके कश्मीर आया है। गीता की याद करके नहीं। क्योंकि गीता ने कहा है कि काम करो, लेकिन फल की चाह मत रखो, लेकिन लोकमान्य ने कहा कि फल नहीं

www.vinoba.in

मिलेगा, यों सोचकर काम करो। इस तरह हम यहाँ आये, लेकिन अल्लाह के फज्ल से लोगों के दिल खुल गये और भूदान की बारी शुरू हो गयी। उससे लोगों के दिलों में जो मुहब्बत है, वह दीख पड़ती है। वैसे बारामुल्ला में जमीन कम मिली, लेकिन यहाँके जो तहसीलदार हैं, उन्होंने बहुत कोशिश की और जमीन मिली। हमने कहा था कि एतबार बटन है। बटन दबाओ तो बिजली की रोशनी मिलेगी, अगर बटन नहीं दबाते हैं तो घर में बिजली आने पर भी अँधेरा ही रहेगा। तहसीलदार साहब ने यह समझ लिया और काम किया तो लोग प्यार से जमीन देने लगे।

यह अल्लाह की करामात है। वह चाहता है तो होता है। हमने कोई खयाल नहीं किया था कि यहाँ जमीन मिलेगी। हम सिर्फ पैगाम पहुँचाने आये थे।

भूदान का हार्द

एक भाई ने सवाल पेश किया है कि मुश्तरका (सामूहिक) खेती के बारे में आपकी क्या राय है? अगर आप उसे पसंद करते हैं तो अलग-अलग जमीन क्यों बाँटते हैं? हम कहना चाहते हैं कि हम जो काम कर रहे हैं, वह प्यार का काम है। आज जो दिल सख्त बन गये हैं, पहले उनको मुलायम बनाने का काम किया जाय, फिर दिलों को जोड़ने का काम किया जाय। सख्त दिल जुड़ नहीं सकते। भूदान में अपने गरीब पड़ोसी के लिए अपनी जमीन का थोड़ा सा रकबा प्यार से देने की बात है। इससे दिल नरम बनते हैं। मान लीजिये कि गाँव के कुल जमीन मालिकों ने गाँव के सब बेजमीनों के लिए प्यार से जमीन दी तो बेजमीनों को इत्मीनान हो जायगा कि हमारी भी फिक्र की जाती है। उससे गाँव में प्यार पैदा होगा। फिर उसके बाद ग्रामदान करके जमीन की मिलकियत मिटाने का काम किया जायगा। खुदा ने हवा, पानी और सूरज की रोशनी के समान जमीन भी सबके लिए पैदा की है। जमीन का मालिक वही हो सकता है, हम नहीं हो सकते। हम उसके खादिम ही बन सकते हैं। अगर हम मालिक होते तो जमीन छोड़कर कैसे जाते? हम मर जाते हैं और जमीन यहींपर कायम रहती है। हमारा जिस्म भी मिट्टी का बना है, जो मिट्टी में मिल जाता है। इसलिए जमीन की मिलकियत का दावा करना शिरकत है और इसीलिए कुफ्र है। इसी बात को हम समझाते हैं।

कोऑपरेटिव नहीं, कोऑपरेशन हो

कोऑपरेशन की आवश्यकता है। ग्रामदान के बाद यह जरूरी नहीं है कि 'कलेक्टिव फार्मिंग' ही किया जाय। यह सब लोगों की इच्छा पर निर्भर है। लोग जैसा चाहें, वैसा कर सकते हैं। लोगों में कितनी ताकत है, यह देखना होता है। अगर लोगों को हिसाब मालूम नहीं है तो फिर गाँव का एक खेत बनाने से कुछ मैनेजर्स रखने पड़ेंगे, फिर वहाँ मैनेजरों का निजाम राज्य हो जायगा, गाँव का नहीं। हम तो गाँव का राज्य चाहते हैं। इसीलिए हम कहते हैं कि ग्रामदान के बाद सबको थोड़ी-थोड़ी जमीन तकसीम की जाय। हम किसानों से कहेंगे कि आप दो-चार किसान इकट्ठा होना चाहें तो हो सकते हैं। इस तरह मुश्तरका खेती का तजुरबा मिलेगा। फिर लोग उसके मुताबिक तय करेंगे। 'कोऑपरेटिव फार्मिंग' की जरूरत नहीं है। 'कोऑपरेशन' के गुण की, सिफत की जरूरत है।

ग्रामदान के बाद गाँव-कमेटी बनेगी। गाँव का हर बालिग मेम्बर होगा। उस कमेटी के फैसले कुल राय से होंगे, कसरत राय से नहीं। अगर कुछ लोगों ने कहा कि जमीन तकसीम करनी चाहिए और कुछने कहा कि मुश्तरका खेती होनी चाहिए तो गाँववाले तय करेंगे कि दोनों तजुरबे चलें। जो मुश्तरका खेती में शामिल होना चाहते हैं, वे उसमें शामिल होंगे और जो अलग खेती करना चाहते हैं, वे अलग खेती करेंगे। इस तरह हम इसे 'ओपन क्वेश्चन' रखना चाहते हैं। फिर धीरे-धीरे हिंदुस्तान में तालीम बढ़ेगी तो मुश्तरका खेती की तरफ कदम बढ़ाये जा सकेंगे। चीन में ऐसा ही किया गया। पहले उन्होंने जमीन तकसीम की। फिर किसानों से 'कोऑपरेटिव फार्मिंग' के लिए कहा, जो उसमें आये। उन्हें सरकार की तरफ से मदद देने की बात कही गयी। यह सब अक्ल की बात है। हम भी उसी तरह से आगे बढ़ना चाहते हैं, लेकिन चीनवालों ने जबर्दस्ती से जमीन छीन ली थी, वैसा हम नहीं करना चाहते हैं। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

फलीयाज़ (जम्मू) २७-६-'५९

संगठित होकर आप सारी समस्याओं का निराकरण करें

आज इन लोगों ने हमें पहले कहा कि "सभा जरा देरी से होगी। क्योंकि धूप बहुत तेज है।" फिर आसमान में बादल आ गये तो कहने लगे कि "अब बारिश का रंग दीखता है, इसलिए सभा जरा जल्दी ही करेंगे।" यह इन्सान की हालत है। उसका दिल बदलता रहता है। हम आठ साल से पद-यात्रा कर रहे हैं। जो वक्त तय होता है, उसी वक्त हम हर रोज सभा करते हैं, चाहे उस वक्त मूसलाधार वर्षा हो या कड़ी धूप। सुननेवाले भींगते रहते हैं और बोलनेवाला भी। अभी तक का हमारा अनुभव है कि हमें कभी बारिश में तकलीफ नहीं हुई। बारिश तो भगवान की कृपा है, अल्लाह का फज्ल है। बारिश में भीगने के बाद दो बातें करनी चाहिए। (१) घर जाकर कपड़े बदलना और (२) आग के पास बैठना। इससे बारिश में घंटों घूमते रहने पर भी तकलीफ नहीं होगी।

गाँव की हालत

हम चाहते हैं कि छोटे-छोटे गाँवों की ताकत बने। सभी मिल-जुलकर काम करें। आजकल हम गाँव की हालत के बारे में क्या सुनते हैं? जमीन कम है, काम कम है और आबादी बढ़ रही है। हर साल मरदुम शुमारी होती है तो पता चलता है कि आबादी बढ़ी है और जमीन का रकबा कम है। गाँव में दस्तकारियाँ कुछ नहीं हैं। गाँववाले कपड़ा कम खरीदते हैं, पर जो भी खरीदते हैं, वह बाहर ही से खरीदते हैं। गाँव के लिए जितने कपड़े की जरूरत हो और वह हम गाँव में ही बना लें तो लोगों को दस्तकारी मिल सकती है। जब हम कोई दस्तकारी नहीं करते तो आलसी और सुस्त बनते हैं—अलावा इसके गाँवों में गंदगी होती है, जिसकी वजह से बीमारियाँ फैलती हैं। अगर हम मलमूत्र की खाद बनायें तो हर आदमी के हिसाब से साल में छह रुपये का खाद बन सकती है।

अभी हमसे एक भाई मिले। वे हमारे दोस्त निकले। उन्होंने कहा कि आजकल गाँव में शराब, बीड़ी, सिगरेट का परिमाण बहुत बढ़ रहा है। इन सब चीजों के लिए पैसे चाहिए, जो

www.vinoba.in

हमारे पास ही एक सड़क बन रही है, उस जगह मजदूरी करके लोग ले आते हैं। सारे जवान-जवान सड़क पर काम करने चले जाते हैं। इन सड़कों ने खेतों को खाली बना दिया है। खेतों में काम करने के लिए कोई नहीं रहता। सड़क पर पैसा ज्यादा मिला, पर ऊपर गल्ला कम हुआ तो दूसरी खराबियाँ बढ़ेंगी। कुछ लोग हमें सुना रहे थे कि यहाँ आपकी हिफाजत के लिए सिपाही आये हैं, उनसे भी तकलीफ बढ़ी है। उनके लिए जमीन ली गयी तो जमीनवालों को उसका मुआवजा नहीं मिला है। वह अब कब और कैसे मिलेगा ? यह मालूम नहीं। नये-नये कानून बनते जा रहे हैं। पर ये जंगल के, गाँव के अपढ़ लोग कानून को नहीं जानते। आज पढ़े-लिखे भी कानून नहीं जानते हैं तो ये अपढ़ तो जान ही कैसे सकते हैं ?

रोग का इलाज

गाँव में बहुत तरह की तकलीफें हैं। वे कम कैसे हो सकती हैं ? इसका भी इलाज है। सूत का एक धागा हाथ में लें तो वह टूट जाता है, यह बात किसान अच्छी तरह से जानता है ! इसीलिए वह बहुत सारे धागे इकट्ठा करके बट बनाता है तो मजबूत रस्सी बन जाती है। जिस तरह अलग-अलग धागे हों, वैसे ही आप लोग अलग-अलग गाँव में रहते हैं। और यह मेरी चीज है, इसपर मेरी मिल्कियत है, ऐसा खयाल रखते हैं। पर भाई, जब आप अपने जिस्म को भी यहीं पटककर चले जाते हैं तो जमीन और घर की मालकियत की बात कैसे करते हैं ? इसलिए हम कहते हैं कि आप 'मेरी' 'मेरी' छोड़कर 'हमारी' 'हमारी' कहिये। गाँव हमारा, जमीन हमारी और सारी चीजें हमारी हैं, ऐसा समझकर बाँटकर खाइये। रोजमर्रा काम आनेवाली चीजें गाँव में ही बनाइये। कहते हैं कि यहाँ मवेशी खूब मरते हैं तो आप जूते यहीं क्यों नहीं बनाते ? यह सारा न सोचेंगे तो हालत और बिगड़ेगी। इसलिए इन सारी बातों पर सोचिये। मिल-जुलकर रहिये। आप समझ लीजिये कि इसीके लिए ग्रामदान की सख्त जरूरत है।

हम आपसे एक ही बात समझा रहे हैं कि एक बनो और नेक बनो ! एक बनने के लिए ग्रामदान करना होगा। फिर हम अपने दुःख अलग-अलग होकर सरकार के पास नहीं रोयेंगे। मिल-जुलकर दुःखों को दूर करने की योजना बनायेंगे।

आज हमें फाँका करना पड़ा है। यहाँ चश्मा बह रहा है। आज हम उसीका पानी पीकर रहेंगे। जम्मू-कश्मीर राज्य में यह पहला ही दिन है, जो हमें जमीन नहीं मिली है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पीडा (जम्मू-कश्मीर) २८-८-'५९

अधिक अन्न उपजाने के लिए गाँवों को आत्म-निर्भर बनायें

आप अपने माल-मवेशियों के साथ जंगल में रहते हैं। इन दिनों सब लोगों की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। आबादी बढ़ रही है। जमीन का रकबा बढ़ नहीं रहा है। इसलिए गरीबों की गुर्बत भी बढ़ ही रही है। ऐसी हालत में आज सरकार ही हमारी तरक्की के लिए सब कुछ करेगी, ऐसा मानना गलत है। अपनी तरक्की के लिए आपको खुद मेहनत करनी पड़ेगी। सरकार भी करेगी, करती भी है। लेकिन जो काम बारिश भी नहीं कर सकती, वह सरकार क्या करेगी ? बारिश भी बरसी और हमने मेहनत नहीं की तो क्या फसल उगेगी ? ऊपर से बारिश बरसे और इधर हम काम करें, तभी फसल आती है। ताली दोनों हाथों से बजती है।

मुसीबतों से छूटने का उपाय

आपकी कुछ मुसीबतें हैं। आप उन मुसीबतों से छुटकारा चाहते हैं। इसलिए मुझे अर्जियाँ देते हैं। मैं भी आपको मुसीबतों से बचने में मदद देने के लिए ही घूम रहा हूँ। लेकिन मदद कहाँ-से लाऊँ ? क्या ऊपर से ? हमारा काम आपस में मेल-जोल बढ़ाने का है। आपके दिल के साथ दिल जुड़ जायँ तो एक ताकत बनेगी। आज हम एक-दूसरे के खिलाफ काम करते हैं। इसलिए हमारी ताकतें आपस में टकराती हैं। हरएक गाँव में आज ऐसा ही हो रहा है। हम चाहते हैं कि लोग आपस में टकराना बन्द करें और हिल-मिलकर रहना सीखें। मेल-जोल बढ़ने से ही मुसीबतों से छुटकारा मिल सकता है।

कोई दुःखी होता है और कोई सुखी होता है तो लोग कहते हैं कि यह "अपना-अपना नसीब है।" लेकिन मैं ऐसा मानना बिल्कुल गलत समझता हूँ। क्या कुनबे में भी हम ऐसा मानते हैं ? नहीं तो समाज में भी ऐसा नहीं मानना चाहिए।

सबकी परीक्षा

परमेश्वर गरीब, अमीर दोनों की आजमाइश करता है। गरीब आदमी परमेश्वर को याद करता है, मेहनत-मशक्कत करता है, सचाई और ईमानदारी से रहता है और आलसी, व्यसनी नहीं बनता तो भगवान उसपर राजी होता है। यही बात अमीर के लिए है। भगवान बराबर देखता है कि अमीर में कितनी सचाई है ? उसके दिल में रहम या मुहब्बत है या नहीं ? वह किसीका गला तो नहीं काटता है ? अगर वह गलत काम करता है तो भगवान उसपर राजी नहीं रहता है।

भगवान ने हम सबको एक ही जगह लाकर क्यों रखा ? वह चाहता है कि हम सब मिलकर रहें। यह हिन्दू, यह मुसलमान, यह राजपूत, यह गूजर, यह हरिजन, यह बकरवाल—ऐसे फिरके मानना गलत है। हम सब परमात्मा की सन्तान हैं। हमारे सबके पेट में भूख है। सभीको खाना चाहिए। सभीके पास दो-दो हाथ हैं। उन हाथों का उपयोग मेहनत करने में और दान देने में करना चाहिए। अल्लाह ने सबको समान बनाया है। गरीब दुनिया को छोड़कर जायगा तो उसकी झोंपड़ी यहीं रह जायगी और अमीर का महल-मकान भी यहीं रह जायगा। गरीब अकेला आया और अकेला ही जायगा, वैसे ही अमीर भी अकेला आया और अकेला ही जायगा। दोनों नंगे आये और नंगे जायँगे। दोनों की हालत समान होगी। इसलिए मैंने अगर मेरी अक्ल का उपयोग, इस्तेमाल दूसरे को तकलीफ देने में किया तो भगवान मुझे सजा देगा और अगर मैंने अपनी अक्ल का अच्छा उपयोग किया तो वह हमें नजात देगा। अल्लाह ने हमें जो कुछ दिया है, उसका उपयोग अच्छा करेंगे तो हम कुछ खोयेंगे नहीं, पायेंगे ही।

सुख की राह

मैंने मेरा घर छोड़ा है तो क्या मुझे आज रहने को घर नहीं मिला ? सुख पाने का यही रास्ता है। जो अपनी फिक्र छोड़ता है, वह सुख पाता है। जो अपने ही सुख की परवाह करता है, वह सुखी नहीं होता है। सुखी वह होता है, जो अपने अड़ोसी-पड़ोसी की

चिन्ता करता है। माँ बच्चे का खयाल रखती है, वैसे ही हम पड़ोसी का खयाल रखें। सब मिलकर रहें, बाँटकर खायें, यही हमारा पैगाम है। कबीर साहब ने भी कहा है–"हाथ दिये कर दान रे।" कोई शख्स गाँव में दान दिये बगैर न रहे। सभी लोग देकर खायेंगे, बाँटकर खायेंगे तो गाँव सुखी होगा। गाँव के सभी बाल-बच्चों को घी मिलेगा।

कृष्ण भगवान मक्खन खाते थे। माँ कहती थी, अरे! यह मक्खन बेचना है। मथुरा शहर में मक्खन बेचकर पैसा लाना है। कृष्ण, श्याम कहते थे—"शहर में पैसा है और कंस भी है। शहर का पैसा कबूल करोगी तो कंस को भी कबूल करना होगा। क्या यह मंजूर है?" नहीं तो हम खेती करेंगे, मेहनत करेंगे और मक्खन खायेंगे।

आप लोग भी मक्खन बेचते हो। इससे किसानों के बच्चे कमजोर हो जायँगे। फिर खेती भी कमजोर होगी। इससे शहरवाले और उनके बच्चे भी कमजोर होंगे। इसलिए आपको घी-मक्खन गाँव के बच्चों को खिलाना चाहिए और खुद खाना चाहिए। ◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

रामगढ़ (जम्मू) ५-९-'५९

पाँच बातें

मैं आज आपके सामने पाँच बातें रखनेवाला हूँ।

(१) कश्मीर की सरकार ने यह योजना की है कि मुजारों को जमीन मिले, लेकिन इतने से काम नहीं होगा। मालिकों के पास जो जमीन थी, वह उन्होंने कानून बनने से पहले ही अपने भाई-बंदों में बाँट ली है और बची हुई जमीन सरकार के पास गयी, जो मुजारो में बँटी है। उसमें से बेजमीनों को कुछ भी नहीं मिली। इसलिए कश्मीर में भी यह बात बहुत जरूरी है कि यहाँके छोटे और बड़े सभी जमीनवाले अपने गरीब बेजमीन भाईयों के लिए अपनी जमीन का एक हिस्सा दान दें। जैसे अभी हम सब भक्ति में (मौन में) लीन हो गये तो एक बड़ा ही खूबसूरत नजारा पेश हुआ। वैसे ही सब लोग मिलकर एक काम करते हैं तो ताकत बनती है। इसमें प्रेम से देने की बात है। इसलिए जिसके पास एक कनाल जमीन है, वह भी आधा कनाल दान दे। आधे कनाल से क्या होगा, यह मत पूछो। उससे बहुत कुछ होता है। बहुत खुशी की बात है कि जबसे मैं यहाँ आया हूँ, तबसे बहुत लोगों ने जमीन दी है। इससे मुझमें यह विश्वास पैदा हुआ है कि यहाँपर यह काम चल सकता है।

(२) जमीन के लिए पानी की जरूरत है। पानी का इन्तजाम सरकार से ही करवाना होगा। इसलिए लोग सरकार का ध्यान इसकी तरफ खींचते हैं। वे ठीक ही करते हैं। लेकिन लोग एक होकर माँग करेंगे तो ताकत बनेगी। अगर वे कहेंगे कि हमने अपने गाँव में किसीको बेजमीन नहीं रहने दिया है। सबको जमीन दी है, गाँव का एक कुनबा बनाया है तो उनकी माँग का सरकार पर असर होगा और उनपर खुदपर भी असर होगा। इसलिए मेरा कहना है कि आप गाँव का एक कुनबा बनाकर काम करेंगे तो पानी का भी इन्तजाम होगा।

(३) जम्मू-कश्मीर राज्य में जमीन कम है। इतनी सी जमीन में सबका गुजारा नहीं हो सकेगा, इसलिए गाँववालों को कुछ हुन्नर, उद्योग सिखाने चाहिए। वे कई उद्योग कर सकते हैं। कम से कम कपड़ा बनाने का काम तो कर ही सकते हैं और वही कपड़ा पहन सकते हैं। कृष्णाबहन कह रही थी कि हम यहाँ गाँववालों से सूत कतवाते हैं, उसका कपड़ा बुनवाते हैं, लेकिन गाँववाले वह कपड़ा पहनते नहीं। इसलिए हमें वह कपड़ा बाहर बेचना पड़ता है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आपको यह संकल्प करना चाहिए कि हम अपने गाँव का ही कपड़ा पहनेंगे, बाहर का कपड़ा नहीं खरीदेंगे। एक भाई ने पूछा कि खादी महँगी होती है, इसलिए उसे कैसे पहनें? मैंने जवाब दिया कि भाई! सोचो तो मिल के कारण जो लोग बेकार बने हैं, उन्हें खिलाने का खर्चा भी अगर मिलपर डाला जाय तो मिल का कपड़ा कितना महँगा हो जायगा? यह सोचा है? मिलवाला सबको खिलाने की जिम्मेवारी नहीं उठाता है। खादीवाला वह जिम्मेवारी उठाता है। इसलिए खादी से गरीबों का पालन होता है।

(४) एक भाई ने पूछा कि आप सारे हिंदुस्तान में घूम रहे हैं और १०-१५ दिनों से जम्मू में घूम रहे हैं तो यहाँके माहौल में आपने क्या खूसूसियत देखी? क्या खूबी और खामी देखी? मैंने यहाँपर देखा कि जैसे किसी परती जमीन में खूब खाद पड़ा हो, पर वह खोदी न गयी हो, उसमें बोया न गया हो तो उसको जोतने से उसमें खूब फसल उग सकती है, वैसे ही यहाँकी जमीन और माहौल हमें परती जमीन के जैसी लगी। इसमें खूब फसल आ सकती है। यहाँके लोगों में श्रद्धा है, उमंग है। यहाँके लोग बड़ी निष्ठा से हमारी सभाओं में आते हैं। वे समझते हैं कि बाबा आया है तो काम बनेगा। यह सब देखकर मेरा दिल पिघल जाता है। मैं क्या काम कर सकूँगा? भगवान से मेरा सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। मेरी उसीसे प्रार्थना है कि वह यहाँके लोगों को सद्बुद्धि दे और कश्मीर के मसले हल हों। यहाँके लोगों में मैं बड़ी उम्मीद देखता हूँ। यहाँ धर्म-श्रद्धा है, इसलिए धर्म का काम खूब बनेगा।

(५) यहाँपर गाँव-गाँव की सेवा के लिए सेवकों की जरूरत है। गाँव-गाँव में सेवक तैयार होंगे तो उन्हें अपने काम में सरकार के मुलाजिमों को भी मदद मिलेगी। लोग अपनी तरफ से तैयार होंगे, तभी काम बनेगा। यहाँ सीमा पर (पाकिस्तान की सीमा यहाँसे ६ मील दूर है) लश्कर और पुलिस रखी गयी है, सिर्फ उससे क्या होगा? गाँव-गाँव में झगड़े न हों, इसकी बहुत जरूरत है। गाँव-गाँव में गंदगी न हो, बीमारी न हो, झगड़े न हों, इसके लिए सेवकों की जरूरत है। कहीं झगड़ा हो जाय तो सेवक बीच में पड़कर झगड़ा मिटायें। वे उसके लिए मर मिटने की तैयारी रखें। गाँव से गाँव की सेवा के लिए ऐसा एक सेवक मिले तो जम्मू-कश्मीर में सचमुच ही स्वर्ग बनेगा। ◆◆◆

अनुक्रम

१. लोकमान्य की...	शालटेंग	१ अगस्त '५९	पृष्ठ ७४७
२. संगठित होकर आप...	फलीयाज़	२७ जून '५९	„ ७४८
३. अधिक अन्न उपजाने के लिए...	पीड़ा	२८ जुलाई '५९	„ ४४९
४. पाँच बातें	रामगढ़	५ सितम्बर '५९	„ ४५०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट क० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in